शब्दों से ही हम उड़ेंगे आकाश में

गांधीनगर-गुज.। गांधीनगर में कड़ी मास कॉम एंड जर्नलिज़म कॉलेज में एक दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार एवं मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. अनुज तथा माउण्ट आबू से ओमशान्ति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर इस वर्कशॉप में स्टूडेंट्स के साथ रूबरू हुए। ढ़ाई घंटे के इस सत्र में पॉज़ीटिव जर्नलिज़म को लेकर ब्र.कु. अनुज ने बताया कि शब्दों से हम सारे पत्रकार खेलते हैं और शब्दों से ही वाक्य बनता है, इन्हीं वाक्यों से हम खुश होते हैं या दुःखी होते हैं। लेकिन इन शब्दों को चुनने से पहले क्या हम थोड़ा बहुत सोचते हैं। आपको पता होना चाहिए कि आपके शब्दों को लाखों-करोड़ो लोग पढ़ते हैं, अगर उसमें एक भी आहत करने वाला शब्द होगा तो उसका कितना गलत प्रभाव जनता के ऊपर पड़ेगा। इसके लिए हमें थोड़ा सा अपने अंदर आध्यात्मिकता को अपनाना होगा जिससे हमारी बुद्धि भी सही होगी और हम अच्छा से अच्छा सोचकर लिख पायेंगे।

कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रानी, मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. अनुज, निदेशक मितेश मोदी, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. कमलेश व कॉलेज के स्टूडेंट्स।

ओमशान्ति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आप लोगों को सबसे पहले अपनी दिनचर्या को मेंटेन करना चाहिए। थोड़ा जल्दी सोएंगे जल्दी उठेंगे तो ब्रेन फ्रेश होगा और आप अपने क्षेत्र में आगे बढ़ पाएंगे। बाद में विद्यार्थियों को मेडिटेशन भी कराया गया।

'हमारी सरकार हमारे अधिकार' कार्यक्रम के नाम राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो अवॉर्ड

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा सामुदायिक क्षेत्र में रेडियो द्वारा लोगों को अलग-अलग सूचनाएं प्रदान करने हेतु उनके अनुपम प्रयास के लिए यह अवॉर्ड दिया जाता है। छठे राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो सम्मेलन में लगभग पूरे देश भर के 190 सामुदायिक रेडियो स्टेशन्स ने भाग लिया। भारत सरकार एवं सूचना प्रसारण राज्य मंत्री श्री राज्य वर्धन सिंह राठोर ने विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में रेडियो मधुबन के स्टेशन हेड ब्र.कु. यशवंत को **'राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो अवॉर्ड-2016' प्रदान किया।**

रेडियो मधुबन की उपलब्धियाँ, जिसके आधार से मिला अवॉर्ड

- रेडियो मधुबन द्वारा बनाये गए `हमारी सरकार हमारे अधिकार' कार्यक्रम ने मारी बाज़ी।
- इस कार्यक्रम को मिला `राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो अवॉर्ड-2016'।
- इसमें आदिवासियों के लिए बनाए गए 14 एपिसोड।
- इसमें सरकार द्वारा बनाए गए `पेसा कानून' के बारे में फैलाई गई जागरुकता।
- स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिलकर की गई ग्राम सभाएँ आयोजित।
- पिछले 5 वर्षों से माउण्ट आबू और उसके आस-पास के क्षेत्र को अपनी सेवाओं से किया लाभान्वित।

भारत सरकार एवं सूचना प्रसारण राज्य मंत्री श्री राज्य वर्धन सिंह राठोर द्वारा अवॉर्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. यशवंत।

प्रेम आकाश है प्रेम अवकाश है ....

- ब्र.कु. नेहा,मुम्बई

तुम ध्यान कर रहे हो, पर अपने ध्यान को प्रेम से अलग न होने दो। प्रेम तो खुद ध्यान का परिणाम है। काम और प्रेम का कहीं कोई संबंध नहीं है। काम तो उफान है, उत्तेजना है, विकृति है। प्रेम तो तुम्हें सौम्य बनाता है, आत्मा का सामीप्य देता है। तुम्हें अपने प्रेम के बदले में क्या मिलता है, यह मत देखो। तुम बस अपनी ओर से प्रेम दो। प्रेम देकर ही प्रसन्न होता है, सार्थक होता है।

हमारी अभीप्सा ही संयोगों का निर्माण करती है तथा संयोगों के ताने-बाने बुनती है और फिर हमारी अभीप्सा जिससे पूरी हो सके, उससे मिला देती है, तो अचानक मुलाक़ात हो जाती है, ठीक ऐसे ही जैसे किसी राहगीर को कोई मोती मिल जाए, मरुस्थल में फूलों की सुवास मिल जाए, पानी के प्यासे को पीने को अमृत मिल जाए।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देय लै जाय।।
जिहि घट प्रीति न प्रेम रस, पुनि रसना नहिं राम।
ते नर इस संसार में, उपजे भए बेकाम।।
अकथ कहानी प्रेम की, कछू कही ना जाय।
गूंगे केरी सरकरा, खाई और मुसकाय।।

प्रेम का मार्ग है ही ऐसा निःस्वर, फिर भी संगीत से सराबोर। मौन, फिर भी मुखर। मिटना, फिर भी पाना। मृत्यु, फिर भी अमरत्व, प्रेम यानी बूंद समाना समुद्र में। पहले बूंद समुद्र में समाने को आतुर होती है। फिर समुद्र बूंद में चला जाता है। पहले कुंभ कूप में, फिर कूप कुंभ में। मार्ग ही ऐसा है।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै प्रेम न हाट बिकाए। प्रेम की कोई खेती नहीं होती। यह कोई बाड़ी में नहीं उपजता। करने जाओ तो इसकी कृषि नहीं होती। यह तो अपने आप ही खिलने वाला फूल है। प्रेम कोई बाज़ार में बिकता नहीं है। बाज़ार में प्रेम के नाम पर शरीर ख़रीदा-बेचा जा सकता है, पर प्रेम कोई वस्तु थोड़े ही है कि ख़रीद लोगे, बेच दोगे। प्रेम तो हृदय की सुवास है, हृदय की झंकार है, हृदय का आनंद है। हृदय ही प्रेम का आधार है। यह ख़रीद-फरोख़्त की वस्तु नहीं है।

मन से उपजा प्रेम काम है, विकार है, हृदय से उपजा प्रेम जीवन का श्रृंगार है, भावना है, समर्पण है। यह प्रेम मौन है, कुर्बानी है। यही प्रेम, प्रेम है। बदले में कुछ पाना चाहे, तो वह प्रेम कहां हुआ? वह तो प्रेम का सौदा हुआ, स्वार्थ हुआ। प्रेम बदले में कुछ पाना नहीं चाहता, व्यवस्था भी नहीं, आदेश भी नहीं, यह तो अनुशासन हो गया। प्रेम तो केवल लुटना जानता है, लूटना नहीं। मिटना जानता है, मिटाना नहीं। प्रेम स्वयं अमृत है, पर यह अमृत बनता है ज़हर से। प्रेम ज़हर पीता है। ज़हर पीकर अमृत लौटाता है। यही तो प्रेम मार्ग की ख़ासियत है। मीरा ने ज़हर ही पीया। लोगों ने उसके प्रेम की परीक्षा ज़हर से ही ली। यह तो मार्ग ही कसौटियों से भरा है और जिसमें अगर यह प्रेम परमात्मा से जुड़ा हो, तब तो उसका रूप ही अनेरा हो गया। राजा परजा जेहि रुचै सीस देय लै जाए। देखा, प्रेम कैसी कुर्बानी चाहता है। छोटे-मोटे में राज़ी होने वाला नहीं है वह। शीष ही चाहता है। शीष देओ और प्रेम ले जाओ। नमक और पानी, दूध

और मिश्री एक हुए बग़ैर, एक रूप-एकरस हुए बग़ैर प्रेम अपना वास्तविक रूप ले ही नहीं पाती।

प्रेम को जीओ, प्रेम का विस्तार करो। प्रेम अहिंसा का ही, करुणा का ही, हार्दिकता और भाईचारे का ही सार है। आज घर-घर में, समाज-समाज में प्रेम के गीत गाए जाने चाहिए। प्रेम है तो एकता है। प्रेम तो एक-दूसरे के लिए त्याग और कुर्बानी है। प्रेम है एक-दूजे के बीच माधुर्य। प्रेम है तो सहयोग और कृतज्ञता है। प्रेम स्वयं पुण्य है, प्रेम स्वयं प्रमाद है। प्रेम स्वयं प्रणाम है, प्रेम स्वयं आशीष है। जीसस कहते हैं प्रेम ही परमात्मा है, परमात्मा ही प्रेम है। प्रेम और परमात्मा दोनों एक-दूसरे के बिंब-प्रतिबिंब हैं।

तुम ध्यान कर रहे हो, पर अपने ध्यान को प्रेम से अलग न होने दो। प्रेम तो खुद ध्यान का परिणाम है। काम और प्रेम का कहीं कोई संबंध नहीं है। काम तो उफान है, उत्तेजना है, विकृति है। प्रेम तो तुम्हें सौम्य बनाता है, आत्मा का सामीप्य देता है। तुम्हें अपने प्रेम के बदले में क्या मिलता है, यह मत देखो। तुम बस अपनी ओर से प्रेम दो। प्रेम देकर ही प्रसन्न होता है, सार्थक होता है। संचय कृपणता है। प्रेम कृपण नहीं, कंजूस नहीं। प्रेम तो सागर है, विस्तार है। उसे देकर आनंद मनाओ। देना ही प्रेम की परिभाषा है।

`अकथ कहानी प्रेम की'। अकथ्य है इसकी कहानी। प्रेम तो बस जीना है। गूंगे केरी सरकरा। प्रेम का स्वाद, प्रेम की मिठास कैसी है, तो कहा कि गूंगे केरी सरकरा। गूंगा कैसे कहेगा कि कैसा स्वाद है गुड़ का, शक्कर का। वह तो बस खा रहा है और मुस्करा रहा है। गूंगा बोल नहीं सकता, पर मुस्कान ही उसकी भाषा है, खीज़ ही उसकी भाषा है। खाता है और मुस्काता है, यानी तृप्ति आ गई। मज़ा आ गया। यह परम स्वाद रहा। मुस्कान ही स्वाद की अभिव्यक्ति है। प्रेम का स्वाद ऐसा ही है। पीड़ा है तो भी, प्रेम की पीड़ा अपलक, अनवरत सुकून ही देती है। वह अहोभाव से ही भरती है। तुम तो बस प्रेम को आत्मसात् हो जाने दो, परमात्मा स्वयं तुम्हें आत्मसात् होते जाएंगे। प्रेम आख़िर परमात्मा का प्रतिबिंब ही है, परछाई ही है। छांह को बरगद से अलग नहीं किया जा सकता। सबसे प्रेम करो। प्रेम को ध्यान ही हो जाने दो। इंसानों से तो प्रेम करो ही, वृक्षों से भी करो। अपने हृदय से उनका भी आलिंगन होने दो। फूलों से प्रेम करो, उन्हें पुचकारो। उन्हें प्रेम से स्पर्श करो। इस स्पर्श की सुखानुभूति और ध्यान में डूब जाओ। तुम एक अलग ही आह्लाद से भर उठोगे। तुमसे फूल खिलेंगे और तुम फूलों से। ऐसे ही जीवन में आनंद का सवेरा होता है।